देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115

Impact Factor
7.523

नवम्बर 2024

Vol.-20, Issue-5(1)

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

वैश्वीकरण के दौर में बदलती सामाजिक व्यवस्था

Guru Nanak Girls College
Sant Pura, Yamuna Nagar

विशेषांक सम्पादक :
डॉ. गीतू खन्ना,
डॉ. अमनदीप कौर

सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग
एडवोकेट

Publisher :

Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

/012 #14567) !89%4!0!:6; <=#$<"%!/01?) @4<6#A8<; $ #B# #0#C9 $DE#8 #@

JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERECE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Vol. 20 ISSUE-5(1) (नवम्बर 2024) ISSN : 2395-7115

हरियाणा साहित्य एवं संस्कृत अकादमी, पंचकूला

एवम्

गुरु नानक गर्ल्स कॉलेज यमुनानगर

बहुविषयक एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के शोध पत्र

अनुक्रमाणिका – नवम्बर 2024

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	डॉ. गीतू खन्ना, डॉ. अमनदीप कौर	11–11
2.	शुभकामना संदेश		12–15
3.	हिन्दी साहित्य में नारी चित्रण	डॉ. गीतू खन्ना	16–22
4.	वैश्वीकरण के दौर में भारतीय शिक्षा संस्कृति और साहित्य	डॉ. शक्ति बुद्दिराजा	23–27
5.	वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में चित्रित परिवर्तित होता पारिवारिक ढांचा	डॉ. अंजू बाला	28–35
6.	वैश्वीकरण का अवधारणात्मक विकास व महिला सशक्तिकरण	संदीप कौर	36–39
7.	वैश्वीकरण के दौर में विखंडित होते जीवन और मानवीय मूल्य : हिन्दी उपन्यासों के सन्दर्भ में	डॉ. अमनदीप कौर	40–45
8.	वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में वर्णित वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था	मिस दीपमाला	46–50
9.	वैश्वीकरणसमये वेदनिहितसामाजिकसिद्दान्तविचारः	अजित कुमार नायक	51–54
10.	साहित्य में वैश्वीकरण का प्रभाव : शरद जोशी और रवींद्रनाथ त्यागी के व्यंग्यात्मक दृष्टिकोण का विश्लेषण	अर्चना बारस्कर	55–60
11.	वैश्वीकरण के दौर में विखण्डित होते जीवन मूल्य 'गिलिगडु' उपन्यास के संदर्भ में	बीना मीणा	61–64
12.	वैश्वीकरण के दौर में दिविक रमेश के बाल कथा साहित्य में चित्रित बाल समस्याएं	दीपिका चौहान, डॉ. रीता सिंह	65–69
13.	वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में वर्णित वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था	धीरेंद्र प्रताप सिंह गौर	70–76
14.	The Impact of Technology on Mental Health of Young Adults : A Systematic Review	Ms. Divya Rathi, Dr. Nirupma Saini, Dr. Vandana Singh	77-84
15.	वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में वर्णित वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था	डॉ आदित्य प्रकाश	85–89
16.	वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में वर्णित वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था	डॉ. अमिता रेढू	90–97
17.	भूमण्डलीकरण और हिन्दी भाषा	डॉ० चन्द्रा खत्री, डॉ० आशा हर्बोला	98–100

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Nov. 2024 Page No. : 36-39

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

वैश्वीकरण का अवधारणात्मक विकास व महिला सशक्तिकरण

संदीप कौर

अस्सिस्टेंट प्रोफेसर, गुरु नानक गर्ल्स कॉलेज, यमुनानगर।

महिलाएं विकास की महत्त्वपूर्ण सूत्रधार हैं। वे सतत् विकास के लिए आवश्यक परिवर्तनकारी आर्थिक, पर्यावरणीय और सामाजिक परिवर्तनों को साकार करने की दिशा में एक उत्प्रेरक भूमिका निभाती हैं। लेकिन क्रेडिट, स्वास्थ्य देखभाल और शिक्षा तक अपर्याप्त पहुंच उनके सामने आने वाली कई समस्याओं में से एक है। दुनियाभर में कृषि और आर्थिक कठिनाइयों के साथ–साथ जलवायु परिवर्तन ने स्थिति की गंभीरता को बढ़ा दिया है। महिला सशक्तिकरण न केवल व्यक्तियों, परिवारों और ग्रामीण समुदायों की भलाई के लिए आवश्यक है, बल्कि विश्व के कृषि श्रमिकों की समग्र आर्थिक उत्पादकता के लिए भी आवश्यक है, विश्व स्तर पर कृषि श्रम में महिलाओं के महत्वपूर्ण अनुपात को देखते हुए। दुनिया में अधिकार सबसे गरीब महिलाएं हैं। वैश्वीकरण की वर्तमान लहर ने दुनिया भर में महिलाओं के जीवन पर और विशेष रूप से विकासशील देशों में महिलाओं के जीवन में महत्वपूर्ण बदलाव किया है। दूसरी ओर, शिक्षा, काम, स्वास्थ्य देखभाल और नागरिक अधिकारों सहित जीवन के विभिन्न पहलुओं में महिलाओं को वंचित रखा जाता है। दुनिया के कई वर्गों, विशेष रूप से विकासशील देशों में, अभी भी गर्भावस्था के दौरान महिलाओं की पर्याप्त देखभाल की कमी है।

भारत के असंगठित क्षेत्रों में काफी संख्या में कामकाजी महिलाएं कार्यरत हैं। सामाजिक स्थिति के संदर्भ में, भारतीय महिलाओं का बड़ा हिस्सा अभी भी परंपरा से बंधा हुआ है और नुकसान में है। महिलाओं के लिए वैश्वीकरण आर्थिक उन्नति और सामाजिक उन्नति की दृष्टि से दोधारी तलवार है। उदाहरण के लिए, भारत और अन्य गरीब देशों में महिलाओं के विशाल बहुमत को सामाजिक सुरक्षा, सरकार द्वारा सब्सिडी वाले श्रम अधिकारों की सुरक्षा और अन्य सुरक्षा जालों के लाभों से वंचित रखा गया है। दूसरी ओर, विकसित देशों में महिलाओं को स्वास्थ्य देखभाल और शिक्षा तक अधिक पहुंच प्रदान की जाती है। प्रभावी विकास प्राप्त करने के लिए, यह स्वीकार करना महत्वपूर्ण है कि महिलाओं को परिवर्तन के एजेंट और लाभार्थियों के रूप में विकास प्रक्रिया में पूरी तरह से एकीकृत किया जाना चाहिए, क्योंकि भारतीय महिलाओं को विभिन्न तरीकों से विकास संसाधनों के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है।

चूंकि वैश्वीकरण ने भारतीय अर्थव्यवस्था को तेज गति से खोल दिया है, आवश्यक आर्थिक और सामाजिक नीतियों के बिना बहुत जरूरी सुरक्षा तंत्र प्रदान करने के लिए, पारंपरिक तरीकों से उत्पादन में शामिल

महिलाओं को प्रयास करते समय कई मुद्दों से निपटना होगा जो उन अवसरों का लाभ उठाने के लिए एक खुली अर्थव्यवस्था प्रदान करती है। जैसे–जैसे स्थिति बदलेगी, महिलाओं की जानकारी और जरूरतें अधिक विविध होती जाएँगी। अधिकांश भारतीय महिलाएं अभी भी सामाजिक रूप से वंचित हैं। चूंकि वैश्वीकरण तेजी से भारतीय अर्थव्यवस्था को खोल रहा है, इसलिए परंपरागत रूप से उत्पादन में काम करने वाली महिलाओं को एक खुली अर्थव्यवस्था द्वारा प्रदान किए जाने वाले अवसरों का लाभ उठाने की कोशिश करते समय कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इतिहास में भारतीय महिलाओं ने जिन मुद्दों का सामना किया है वे निम्नलिखित हैं :

– पितृसत्ता और सामाजिक दबाव।
– जाति के आधार पर लोगों के खिलाफ भेदभाव और सामाजिक प्रतिबंध।
– उत्पादक संसाधनों तक अपर्याप्त पहुंच।
– गरीबी के प्रभाव और अपर्याप्त पदोन्नति के अवसर।
– लाचारी का अहसास।
– वित्तीय और अन्य संसाधनों तक अपर्याप्त पहुंच।

संयुक्त राष्ट्र के सहस्राब्दी विकास लक्ष्य दुनिया भर में लैंगिक असमानताओं को कम करने में सहायता के लिए लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण पर जोर देते हैं। सरकारों और व्यक्तियों की समृद्धि को समान रूप से बढ़ावा देने के लिए, राजनेताओं और वैज्ञानिकों ने वैश्विक समृद्धि बढ़ाने के साधन के रूप में श्रम के अंतर्राष्ट्रीय विभाजन के लाभों पर जोर दिया है। गरीब देशों में, परिधान असेंबली जैसे रोजगार को महिला घरेलू कर्तव्यों के विस्तार के रूप में देखा जाता है। विकासशील देशों में, संस्कृति रोजगार स्तरीकरण को निर्धारित करती है। विकासशील देशों में महिलाओं के लिए रोजगार के अवसरों की उच्च मांग तेजी से सामाजिक परिवर्तन का कारण बनती है। महिलाओं के काम की मांग के बावजूद षगरीबी का नारीकरणष जारी है।

वैश्वीकरण पूंजी, उत्पादों, सेवाओं और श्रम प्रवास को बढ़ाने की प्रक्रिया है। वैश्वीकरण का आर्थिक दर्शन शायद ही कभी लिंग के बीच अंतर करता है। आम तौर पर यह उम्मीद की जाती है कि बाजार उदारीकरण के परिणामस्वरूप महिलाओं की नौकरियां खो जाएंगी, विशेष रूप से उच्च वेतन वाली नौकरियां। आम धारणा के विपरीत, बढ़ते वैश्विक व्यापार से महिलाओं को मदद मिलनी चाहिए, खासकर अविकसित देशों में। महिलाओं के जीवन की गुणवत्ता, समानता और स्थिति पर वैश्वीकरण के प्रभावों का आकलन करने के लिए, इन अवधारणाओं और उन्हें निर्धारित करने के लिए उपयोग किए जाने वाले चर को परिभाषित करना सबसे पहले महत्त्वपूर्ण है। महिलाओं के जीवन की गुणवत्ता की विशेषता वाले आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक पहलुओं पर सहमति प्रतीत होती है।

हाल के वर्षों में, भारत में वैश्वीकरण में महिलाओं की भूमिका बदल गई है। इक्कीसवीं सदी में गैर सरकारी संगठनों के उदय के कारण, दुनिया भर में महिलाओं के अधिकारों की रक्षा के लिए विभिन्न संगठन विकसित और बनाए गए हैं। निस्संदेह, वैश्वीकरण महिलाओं को जबरदस्त अवसर प्रदान करता है, लेकिन यह उन्हें नई और विशिष्ट बाधाओं के साथ भी प्रस्तुत करता है। लैंगिक असमानता विभिन्न स्रोतों से उत्पन्न होती है, और यह बताना अक्सर मुश्किल होता है कि किस प्रकार की असमानता को दूर किया जा रहा है और जो वैश्वीकरण के परिणामों से बढ़ रही है। एक एकीकृत दुनिया में, लैंगिक असमानता की लागत अधिक होती है।

समाज में बराबरी का दर्जा हासिल करने के लिए महिलाओं को काफी मेहनत करनी होगी। नतीजतन, वैश्वीकरण महिलाओं के लिए फायदेमंद से ज्यादा हानिकारक है। महिलाएं अक्सर अपने परिवारों में कमाने वाली होती हैं, लेकिन समाज इस सच्चाई को मानने से इंकार करता है।

भारतीय संस्कृति ऐसी है कि ज्यादातर लोगों का मानना है कि अगर एक महिला काम करने का फैसला करती है, तो इसका उसके परिवार और बच्चों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। बहरहाल, मामला यह नहीं। एक महिला का पेशा उसके परिवार और बच्चों की कीमत पर नहीं आएगा। सच्चाई यह है कि वैश्वीकरण पुरुषों और महिलाओं को प्रतिस्पर्धा करने के लिए प्रेरित कर रहा है। प्रबंधन और ऊपरी स्तर की भूमिकाओं में महिलाओं का प्रतिनिधित्व कम है। औपचारिक क्षेत्र में महिलाओं की निम्न स्थिति विकासशील देशों में उनके सामाजिक और आर्थिक कर्तव्यों के प्रति तिरस्कार को प्रदर्शित करती है। महिला कार्य को उसके सामाजिक महत्व की तुलना में कम आंका जाता है। नतीजतन, उनके बढ़ते सामाजिक दायित्वों के बावजूद, महिलाओं के श्रम को पुरुषों की नौकरी से कमतर के रूप में कलंकित किया जाता है। दुनिया भर में कई गैर–सरकारी संगठनों (एनजीओ) के गठन के साथ–साथ उनकी संयुक्त गतिविधियों ने अविकसित देशों में महिलाओं के जीवन में सुधार किया है।

संयुक्त राष्ट्र दशक ने विकासशील देशों में महिला श्रम के महत्त्व और महिला मांगों को पूरा करने के लिए आर्थिक कार्यक्रमों की विफलता पर प्रकाश डाला। वैश्वीकरण को विश्व व्यवस्था में प्रमुख बदलावों से जोड़ा गया है। भारत में वैश्वीकरण का अर्थ है देश की अर्थव्यवस्था को वैश्विक अर्थव्यवस्था से जोड़ना। इसका अर्थ है विदेशी निगमों को भारतीय अर्थव्यवस्था के कई क्षेत्रों में निवेश करने की अनुमति देना। भारत की प्रमुख वैश्वीकरण नीति की कई शीर्षकों के तहत जांच की जा सकती है।

लेकिन केवल प्रभावी राष्ट्रीय नीतियां और एक सक्षम सामाजिक और आर्थिक वातावरण ही वैश्वीकरण को अच्छे के लिए एक शक्ति बना सकता है। वैश्वीकरण एक ऐसी घटना है जो सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और कानूनी स्तर पर लोगों के जीवन को प्रभावित करती है। वैश्वीकरण निगमों को कई मोर्चों पर प्रतिस्पर्धात्मक लाभ प्रदान करता है। वे अन्य देशों में उत्पादन करके परिचालन लागत बचा सकते हैं, कच्चे माल को अधिक सस्ते में खरीद सकते हैं क्योंकि टैरिफ कम या समाप्त हो जाते हैं, और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि लाखों नए ग्राहकों तक पहुंच प्राप्त करें। एक ओर, उत्पादों, पूंजी और श्रम के सीमा पार प्रवाह के परिणामस्वरूप नई नौकरियों और आर्थिक विकास का सृजन हुआ है। इस शोध में आर्थिक एकीकरण, तकनीकी प्रगति और लैंगिक असमानता पर सूचना उपलब्धता के प्रभावों की जांच की गई है।

यह दावा करता है कि वैश्वीकरण से सभी को लाभ नहीं होता है। जिन महिलाओं को सबसे अधिक प्रतिबंधात्मक प्रतिबंधों का सामना करना पड़ता है, वे अक्सर पीछे छूट जाती हैं। जबकि वैश्वीकरण ने अधिक लैंगिक समानता के लिए कुछ बाधाओं को दूर करने में मदद की है, शेष बाधाओं को दूर करने के लिए और अधिक सार्वजनिक कार्रवाई की आवश्यकता है। बंदोबस्ती, एजेंसी, और आर्थिक अवसरों तक पहुंच में लैंगिक असमानताओं को सार्वजनिक नीति द्वारा संबोधित किया जाना चाहिए। पिछले तीन दशकों में, दुनिया ने उत्पादों और सेवाओं, प्रौद्योगिकी और सूचनाओं के बढ़ते विश्वव्यापी प्रवाह से प्रेरित एक बड़ी आर्थिक क्रांति देखी है। इन विकासों ने व्यक्तियों, परिवारों, व्यवसायों के लिए आर्थिक वातावरण को बदल दिया है।

वैश्वीकरण ने गरीब देशों में महिलाओं के लिए नए अवसर तो लाए हैं, लेकिन महिलाओं के मानवाधिकारों

के लक्ष्यों को प्राप्त करने में नई समस्याएं भी पेश की हैं। जबकि वैश्वीकरण ने निस्संदेह कुछ महिलाओं के लिए संभावनाएं प्रदान की हैं, इसके परिणामस्वरूप कुछ देशों में श्रम बल की भागीदारी में वृद्धि हुई है, इस तथ्य के बावजूद कि राष्ट्रों के बीच और भीतर गहरी असमानताओं के कारण दूसरों के लिए हाशिए पर भी है। नई शैक्षिक अवधारणाओं, विदेशी व्यापारों और शैक्षिक पहुंच के विस्तार ने महिलाओं को उच्च और विदेशी शिक्षा प्रदान करने में मदद की है। शिक्षा के क्षेत्र में एफडीआई के कारण, अधिक से अधिक विदेशी शीर्ष विश्वविद्यालयों ने अपने परिसरों को या तो सहयोग से या संयुक्त उद्यमों में खोला है, जिससे महिलाओं को विश्व स्तर की शिक्षा प्रदान करने में भी मदद मिली है।

यह देखा गया है कि अधिक शिक्षित महिलाएं अपने अधिकारों के बारे में अधिक जागरूक हैं, जो आत्मविश्वास और आत्म–सम्मान पैदा करती हैं, जिससे उनके अधिकारों के लिए सामूहिक लड़ाई होती है, जैसे कि माता–पिता की संपत्ति का बंटवारा और दहेज और घरेलू हिंसा के खिलाफ प्रगतिशील कानून। वैश्वीकरण की आर्थिक नीतियों और संरचनात्मक परिवर्तनों का विकासशील देशों में महिलाओं पर सबसे अधिक हानिकारक प्रभाव पड़ता है।

अधिकारिक और अनौपचारिक क्षेत्रों का सबसे क्रूर घटक सामाजिक और आर्थिक अधिकारों का अभाव है। इन परिवर्तनों को लागू करने वाले अर्थशास्त्रियों और नीति निर्माताओं को महिलाओं के जीवन पर वर्तमान नीतियों के प्रभाव के साथ–साथ लैंगिक असमानता को भी ध्यान में रखना चाहिए। जीवन की गुणवत्ता बढ़ाने और विकासशील देशों में महिला कर्मचारियों के लिए अधिक अधिकार सुनिश्चित करने से जीवन की गुणवत्ता में सुधार होगा और महिलाओं और उनके परिवारों के लिए एक अधिक स्थायी जीवन स्तर प्रदान होगा। जब तक ये समायोजन नहीं किए जाते, महिलाओं को अर्थव्यवस्था में अपने अधीनस्थ पदों पर नुकसान होता रहेगा। पुरुष प्रवास के परिणामस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएं अभिभूत हैं, जिसके परिणामस्वरूप गरीबी का नारीकरण हुआ है। वैश्वीकरण का समाज के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं पर परिवर्तनकारी प्रभाव पड़ता है। सरकार को समाज में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा देना चाहिए और ऐसा माहौल स्थापित करना चाहिए जो पुरुषों और महिलाओं सहित समाज में सभी हितधारकों के विकास को बढ़ावा दे।

संदर्भ :–

1. जायसवाल, ए. (2014)। भारतीय ग्रामीण महिलाओं पर वैश्वीकरण के प्रभाव पर एक मानवशास्त्रीय दृष्टि : एक महत्वपूर्ण वास्तविकता। शीर्षक, कला सामाजिक विज्ञान।
2. महिला एवं बाल विकास मंत्रालय। (2021, 17 दिसंबर)। ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट। 16 मई, 2022
3. दासगुप्ता, के. (2003, 31 जुलाई)। वैश्वीकरण और भारतीय महिला : समस्याएं, संभावनाएं और सूचना।
4. बासकरविले, आर। (1991)। व्यावसायिक ज्ञान के स्रोत के रूप में जोखिम विश्लेषण। कंप्यूटर और सुरक्षा।
5. समीमी, पी., और जेनताबादी, एचएस (2014)। वैश्वीकरण और आर्थिक विकास : पूरक की भूमिका पर अनुभव जन्य साक्ष्य।